ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 60-61

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

राष्ट्रपति महात्मा गांधी जी के अहिंसा का सिद्धान्त एवं आजाद भारत का लक्ष्य

डॉ0 उषा सिंह

प्र0अ0– इंग्लिश मीडियम प्राईमरी स्कूल, चकताली, विकास क्षेत्र– सिरकोनी जनपद– जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received-08.07.2022, Revised-15.07.2022, Accepted-20.07.2022 E-mail:singhusha1404@gmail.com

सारांशः – *अनादि काल से चले आ रहे इतिहास की ओर देखने मात्र से स्पष्ट होता है कि जब–जब किसी राष्ट्र का व्यक्तित्व विशृखलित होने लगता है, तब–तब राष्ट्र के संगठन के लिए किसी न किसी दिव्य शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। भारत के अस्त–व्यस्त होते व्यक्तित्व की कड़ियों को आबद्ध करने हेतु क्षीणकाय परन्तु महान आत्मा पोषित करने वाले दिव्य पुरूष महात्मा गांधी की वाणी क्षितिज से उठी और समस्त देश में व्याप्त हो, भारतीय जन–मानस पर अधिकार करने लगी। जिन्होंने अपने देश के जीवन को शुद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिए स्वप्न देखें एवं उन्हें चरितार्थ करने के लिए दिन–रात प्रयत्न किए, मोहन दास करमचन्द गांधी का यह प्रकाश 2 अक्टूबर सन् 1869 ई0 को पोरबन्दर सुदामापुरी, काठियावाड़ (गुजरात) में करमचन्द्र गांधी के घर उनकी चौथी पत्नी पुतली बाई के गर्भ से उनकी सबसे छोटी सन्तान के रूप में प्राक्ट्य हुआ।*

कुंजीभूत शब्द–व्यक्तित्व, विशृंखलित, प्रादुर्भाव, क्षीणकाय, आत्मपोशित, जन–मानस, चरितार्थ, प्राकट्य, अहिंसकए प्राक्ट्य।

महात्मा गांधी एक महान समाज सुधारक एवं शिक्षाविद थे। उन्होंने आजाद भारत का एक लक्ष्य रखा था। उनका मानना था कि आजादी मैं इसलिए नहीं चाहता कि मेरा देश बड़ा है, जिसकी आबादी सम्पूर्ण मानव जाति का पांचवा हिस्सा है, दुनिया के किसी भी दूसरी जाति का या समाज का शोषण करें। वे कहते है कि मैं अपनी शक्ति भर अपने देश को ऐसा नहीं करने दूंगा। यदि मैं अपने देश के लिए आजादी चाहता हूँ तो, मुझे यह मानना चाहिए कि प्रत्येक दूसरी सबल या निर्बल जाति को भी उस आजादी का वैसा ही अधिकार है। यदि मैं ऐसा नहीं मानता हूं और ऐसी इच्छा नहीं करता हूं, तो उसका अर्थ यह है कि– मैं उस आजादी का पात्र नहीं हूं।[1] मेरी आकांक्षा का लक्ष्य स्वतन्त्रता से ज्यादा ऊँचा है। भारत की मुक्ति के द्वारा मैं पश्चिम के भीषण शोषण से दुनिया के कई देशों का उद्धार करना चाहता हूँ। भारत को अपनी सच्ची स्थिति प्राप्त करने का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि हर एक देश वैसा ही कर सकेगा और करेगा।[2] मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि भारत अपनी स्वतन्त्रता, अहिंसक उपायों से प्राप्त करे तो फिर वह बड़ी स्थल सेना उतनी ही बड़ी जल सेना और उससे भी बड़ी वायु सेना रखने की इच्छा नहीं करेगा। यदि आजादी की अपनी लड़ाई में अहिंसक विजय प्राप्त करने के लिए उसकी आत्म चेतना को जितनी ऊँचाई तक उठानी चाहिए, उतनी ऊँचाई तक वह उठ सकी, तो दुनिया के माने हुए मूल्यों में परिवर्तन हो जायेगा और लड़ाईयों के साज–सामान का अधिकांश भाग निरर्थक सिद्ध हो जायेगा। ऐसा भारत भले ही महज एक सपना हो, बच्चों के जैसी कल्पना हो, लेकिन मेरी राय में अहिंसा के द्वारा भारत के स्वतन्त्र होने का फलितार्थ तो बेशक यही होना चाहिए। .....तब उसकी आवाज दुनिया के सारे हिंसक दलों को नियन्त्रण में रखने की कोशिश करने वाले एक शक्तिशाली देश की आवाज होगी।[3]

मैं ह्रदय की गहराईयों से यह महसूस करता हूं कि दुनिया रक्तपात से बिल्कुल ऊब गयी है। दुनिया इस असहय स्थिति से बाहर निकलने का मार्ग खोज रही है और मैं विश्वास करता हूं तथा उस विश्वास से सुख और गर्व का अनुभव करता हूं कि शायद मुक्ति के प्यासे जगत को यह रास्ता दिखाने का श्रेय भारत की प्राचीन भूमि को ही मिलेगा।[4]

हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय सरकार क्या नीति अख्यितयार करेंगी, वह मैं नहीं कह सकता। संभव है कि अपनी प्रबल इच्छा के रहते हुए भी मैं तब तक जीवित न रह सकूं। अगर उस वक्त तक मैं जिन्दा रहा, तो अपनी अहिंसक नीति को यथा सम्भव सम्पूर्णता के साथ अमल में लाने की सलाह दूंगा। विश्व की शान्ति एवं नई विश्व व्यवस्था की स्थापना में, यही हिन्दुतान का सबसे बड़ा हिस्सा भी होगा। मुझे आशा तो यह है कि चूंकि हिन्दुस्तान में इतनी लड़ाकू जातियां है और स्वतन्त्र हिन्दुस्तान की सरकार के निर्णय में सबका हिस्सा होगा, इसलिए हमारी राष्ट्रीय नीति का झुकाव, मौजूदा सैन्यवाद से भिन्न किसी अन्य प्रकार के सैन्यवाद की तरफ होगा। मैं यह उम्मीद तो जरूर करूगां कि एक राजनीतिक शस्त्र की हैसियत से अंहिसा की व्यावहारिक उपयोगिता का हमारा पिछला सारा प्रयोग बिल्कुल विफल नहीं जायेगा और सच्चे अहिंसावादियों का एक मजबूत दल हिन्दुस्तान में पैदा हो जायेगा।[5]

जिस तरह देश प्रेम का धर्म हमें यह सीखता है कि व्यक्ति को परिवार के लिए, परिवार को गांव के लिए, गांव को जनपद के लिए और जनपद को प्रदेश के लिए मरना सीखना चाहिए। इसी प्रकार किसी देश को स्वतंत्र इसलिए होना चाहिए कि, आवश्यकता पड़ने पर वह संसार के कल्याण के लिए अपना बलिदान दे सके। इसलिए राष्ट्रवादी की मेरी कल्पना यह

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

है कि– मेरा देश इसलिए स्वाधीन हो कि प्रयोजन उपस्थित होने पर सारा देश मानव–जाति की प्राण की रक्षा के लिए स्वेच्छापूर्वक मृत्यु का आलिंगन करें। उसमें जाति द्वेश के लिए कोई स्थान नहीं है।
मेरी कामना है कि– हमारा राष्ट्र प्रेम ऐसा ही हो।[6]

मैं भारत का उत्थान इसलिए चाहता हूं कि सारी दुनिया उससे लाभ उठा सके। मैं यह नहीं चाहता कि भारत का उत्थान दूसरे देषों की नाश की नीव पर हो।[7]

निष्कर्षत– हम यह कह सकते है कि आज विश्व में बढ़ती हुई सैन्य साजो–सामान की होड़ एवं अन्तर्राष्ट्रीय विद्वेष के विषैले जहर को रोकने का कार्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अंहिसा के सिद्धान्तों द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में उनके विचार बहुत ही उच्च कोटि के है– उन्होंने कहा है कि सार्वजनिक जीवन के लगभग 50 वर्ष के अनुभव के बाद आज मैं यह का सकता हूं कि अपने देश की सेवा दुनिया की सेवा से असंगत नहीं है– इस सिद्धान्त में मेरा विश्वास बढ़ा ही है। यह एक उत्तम सिद्धान्त। इस सिद्धान्त को स्वीकार करके ही दुनिया की मौजूदा कठिनाईयों का निराकरण किया जा सकता है और विभिन्न राष्ट्रों में जो पारस्परिक द्वेष भाव नजर आता है उसे रोका जा सकता है।[8]

वास्तव में गांधी जी ने आजाद भारत का जो लक्ष्य रखा और जिस अहिंसक अस्त्र से उन्होनें आजादी प्राप्त की वह भारत ही नही अपितु सम्पूर्ण विष्व एवं मानवता के लिए अद्वितीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यंग इण्डिया, 06 मई, होगी।
2. इण्डियन केस फॉर स्वराज : 1929.
3. हरजिन सेवक, 21 जून, 1942.
4. यंग इण्डिया, 26 दिसम्बर, 1924.
5. गांधी जी इन इण्डियन विलिजेज; पृष्ठ संख्या 170.
6. यंग इण्डिया, 12 मार्च, 1925.
7. यंग इण्डिया, 4 अप्रैल, 1929.
8. हरिजन सेवक, 17 नवम्बर, 1933.
9. सिंह, उषा : 21वीं सदी की प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियों के समाधान में गांधी शिक्षा दर्शन का योगदान।
10. गांधी जी मोहन दास करमचन्द : अहिंसक समाज की और नवजीवन प्रकाशन, मन्दिर, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, 1955.

*****